SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोरोना वायरस संक्रमण काल का प्रभाव – शिक्षा एवं समाज

प्रीति सिंह, अध्यापक शिक्षा संस्थान,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
प्रीति सिंह, अध्यापक शिक्षा संस्थान,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 19/05/2020
Revised on : -----
Accepted on : 26/05/2020
Plagiarism : 02% on 19/05/2020

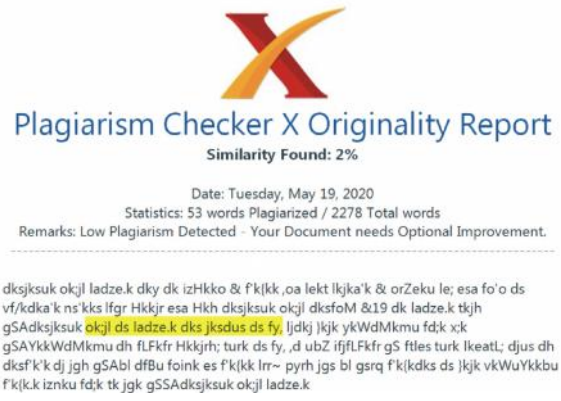
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Tuesday, May 19, 2020
Statistics: 53 words Plagiarized / 2278 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

dksjksuk okjl ladze.k dky dk izHkko & f'k{kk ,oa lekt lkjka'k & orZeku le; esa fo'o ds vf/kdka'k ns'kks lfgr Hkkjr esa Hkh dksjksuk okjl dksfoM &19 dk ladze.k tkjh gSAdksjksuk okjl ds ladze.k dks jksdus ds fy, ljdkj }kjk ykWdMkmu fd;k x;k gSAYkkWdMkmu dh fLFkfr Hkkjrh; turk ds fy, ,d ubZ ifjfLFkfr gS ftles turk lkeatL; djus dh dksf'k'k dj jgh gSAbl dfBu foink es f'k{kk lrr~ pyrh jgs bl gsrq f'k{kdks ds }kjk vkWuYkkbu f'k{k.k iznku fd;k tk jgk gSSAdksjksuk okjl ladze.k

शोध सारांश :–

वर्तमान समय में विश्व के अधिकांश देशो सहित भारत में भी कोरोना वायरस कोविड –19 का संक्रमण जारी है। कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए सरकार द्वारा लॉकडाउन किया गया है। लॉकडाउन की स्थिति भारतीय जनता के लिए एक नई परिस्थिति है जिसमे जनता सामंजस्य करने की कोशिश कर रही है। इस कठिन विपदा मे शिक्षा सतत् चलती रहे इस हेतु शिक्षको के द्वारा ऑनलाइन शिक्षण प्रदान किया जा रहा है। कोरोना वायरस संक्रमण काल में समाज का एक बड़ा मजदूर वर्ग प्रभावित हुआ है। लोगो की आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई है। कर्ज होने व नौकरी खोने का डर, अवसादग्रस्त होने से कई लोग आत्महत्या कर रहे है। आपाधापी वाला व्यस्त जीवन व्यतीत करने वाले आज अचानक शांत वातावरण में अपने घरो में रहने को मजबूर हो गए है। कार्यशैली में परिवर्तन आया है जिसका प्रभाव समाज पर भी पड़ रहा है।

मुख्य शब्द :–

कोरोना वायरस, शिक्षा, समाज।

प्रस्तावना :–

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व कोरोना वायरस कोविड –19 से आक्रांत है। भारत में भी इस वायरस का प्रकोप जारी है जिसका समाधान करने के लिए सरकार एवं जनता निरन्तर प्रयासरत है। वायरस अकोशिकीय अतिसूक्ष्म जीव है जो केवल जीवित कोशिका में ही वंश वृद्वि कर सकते है। शरीर के बाहर यह मृत होता है परंतु शरीर के संपर्क में आते ही यह जीवित हो जाता है। इसे क्रिस्टल के रूप में भी इकट्ठा किया जा सकता है। वायरस का शाब्दिक अर्थ विष होता है। सर्वप्रथम सन् 1796 में डॉक्टर एडवर्ड जेनर ने पता लगाया कि चेचक विषाणु के

कारण होता है। विषाणु से होने वाले अन्य रोग है –रेबीज, खसरा, हर्पिस, मेनिनजाइटिस, हिपैटाइटिस, ट्रैकोमा, पोलियो, एड्स, छोटी माता, डेगू ज्वर, गलशोध, इन्फलुएंजा आदि।

कोरोना वायरस कोविड–19 नया वायरस है। वायरस दो प्रकार के जेनेटिक मटैरियल डीएनए या आरएनए से बनते है। डीएनए जीव है और आरएनए निर्जीव है। कोरोना आरएनए वायरस है। शरीर में वायरस से लड़ने की प्रतिरक्षा प्रणाली होती है जो श्वेत रक्त कणिका के रूप में जानी जाती है। शरीर वायरस को खुद नष्ट करता है या फिर एन्टीबॉडी बनाकर नष्ट करता है। अगर कोई वायरस डीएनए वाला होता है तो वह शरीर के अंदर जाकर खुद को द्विगुणित करने लगता है जिसकी पहचान शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली कर लेती है और आसानी से खत्म कर देती है। आरएनए वायरस शरीर की कोशिका में प्रवेश करके खुद को बढ़ाता है जिससे शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली उसे पहचान नही पाती या पहचानने में समय लगता है। वायरस की सबसे बड़ी खासियत खुद को बदलने की होती है। शरीर की कोशिका से बनने के कारण उसके गुणसुत्र बदल जाते है। वायरस में जो जैविक सामग्री होती है, वह एक खास क्रम में ढली होती है अगर उस क्रम का कोई हिस्सा गायब हो गया या उसकी जगह कोई और जुड़ गया तो वायरस का रूप बदल जाता है। कोरोना वायरस के चार प्रकार पहले से ही मौजुद थे जिनका इलाज भी संभव है 2019 में इन्ही किसी एक कोरोना वायरस की जैविक सामग्री मे कुछ परिवर्तन होने से नया कोरोना वायरस बन गया जिसे नोबल कोरोना वायरस कोविड–19 नाम दिया गया।

भारत में 30 जनवरी 2020 को केरल राज्य में सर्वप्रथम कोरोना संक्रमित मरीज की पुष्टि हुई। आज 12 मई 2020 तक संक्रमित मरीजो की संख्या 70756 तक पहुंच गई है एवं कोरोना संक्रमण से 2293 मरीजो की मृत्यु हो चुकी है। 11 मार्च को विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक के द्वारा कोविड–19 को वैश्विक महामारी घोषित किया गया है। भारत एक विकासशील देश है यहॉ की जनसंख्या 130 करोड़ है इतनी बड़ी जनसंख्या को कोरोना संक्रमण से सुरक्षित रखना देश के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। कोरोना वायरस कही भी मिल सकता है। जब कोई संक्रमित व्यक्ति छींकता या खांसता है तो उसके मुंह सें कुछ बूंदे गिरती है जो सीधे जमीन पर भी पहुच सकती है जमीन पर भी यह वायरस कुछ या और अधिक समय तक बना रह सकता हैं यह स्थान पर निर्भर करता है। कोरोना का वायरस इन्सान के शरीर में तभी पहुंच सकता है जब यह आपके आंख, नाक या मुंह में पहुंचे। किसी व्यक्ति के बहुत करीब जाकर बात करने या साथ खाना खाने से भी कोरोना का वायरस फैल सकता है। कोरोना संक्रमण से बचने के लिए मुंह पर मास्क लगाना, सोशल डिस्टेंसिग, हाथ को सैनिटाइज करना, बात करते समय एक मीटर की दूरी बनाकर रखना आवश्यक है। विश्व के अधिकांश देशो में कोरोना ने अपना रौद्र रूप दिखाया है ।

कोरोना संक्रमण से देशवासियो की सुरक्षा के लिए भारत सरकार द्वारा 22 मार्च को जनता कर्फ्यू एवं 25 मार्च से संपूर्ण देश में लॉकडाउन की घोषणा की गई। जिसके तहत सभी विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, औद्योगिक, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, व्यापार, आवागमन के साधन एवं अन्य शासकीय व अशासकीय गतिविधियॉ अनिश्चित कालीन बंद हो गई है। कोरोना संक्रमण के इस अनिश्चितता की स्थिति में लॉकडाउन का प्रभाव शिक्षा एवं समाज पर भी पड़ा है। अभी वर्तमाान स्थिति तक जो प्रभाव देखने को मिल रहा है उसे उल्लेखित करने का प्रयास किया है।

कोरोना संक्रमण काल का शिक्षा पर प्रभाव :–

विद्यार्थियों की शिक्षा सतत् चलती रहे इस हेतु स्कूल एवं कॉलेज के शिक्षको के द्वारा ऑनलाइन क्लॉस संचालित किए जा रहे है। शिक्षा में इन्टरनेट का प्रयोग बढ़ गया है। गूगल क्लॉस रूम से भी विद्यार्थियों को शिक्षित किया जा रहा है, ऑनलाइन नोट्स उपलब्ध कराना, उनकी शंका समस्याओं का समाधान भी शिक्षको के द्वारा किया जा रहा है। जूम एप का इस्तेमाल पहले की तुलना में 49 प्रतिशत बढ़ गया है, जिसका उपयोग ऑनलाइन क्लॉस एवं प्रशिक्षण के लिए किया जा रहा है। डिजिटल पद्वितयों के उपयोग से कक्षा में सिखना ज्यादा संवादात्मक (इन्टरएक्टिव) हो गया है। छत्तीसगढ़ सरकार ने

ऑनलाइन स्कूली शिक्षा के लिए ''पढ़ई तुहार दुआर'' पोर्टल लांच किया है । इस पोर्टल के जरिए लाखो छात्र बिना किसी शुल्क के ऑनलाइन पढ़ाई कर सकेगें। लॉकडाउन अवधि के बाद भी यह पोर्टल बच्चो की निरन्तर पढ़ाई में उपयोगी होगा। ई–लर्निग प्लेटफार्म में ऑनलाईन इंटर–एक्टिव कक्षाओं के जरिए शिक्षक और बच्चे अपने –अपने घरों से ही वीडियो कांफ्रेंसिंग से जुड़ेगे। इस पोर्टल में शासकीय स्कूलो के शिक्षकों एवं बच्चो का पंजीयन होगा। पोर्टल पर विद्यार्थियों के लिए वीडियो, ऑडियो और अन्य प्रकार के कंटेट विषयवार उपलब्ध होगा। स्कूल शिक्षा विभाग की वेबसाइट सीजीस्कूलडॉटइन पर कक्षा पहली से दसवी तक विद्यार्थियों की पढ़ाई के लिए संसाधन उपलब्ध है। सीजीस्कूलडॉटइन पोर्टल पर ही छत्तीसगढ़ सरकार ने 17 अप्रैल 2020 को महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिए भी ऑनलाईन पढ़ाई की सुविधा का भी शुभारंभ किया है। इस पोर्टल पर स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमानुसार सामग्री के रूप में पीडीएफ, ऑडियो तथा वीडियो लेसन उपलब्ध है। पोर्टल में महाविद्यालय के प्राध्यापको द्वारा अध्ययन अध्यापन से संबंधित सामग्री विषयवार अपलोड किया जा रहा है जिसका पोर्टल में पंजीकृत छात्र उपयोग कर सकेगें। छत्तीसगढ़ सरकार ने शालाओं में दिए जाने वाले पके हुए गर्म भोजन के स्थान पर 29 लाख बच्चो को घर पहुॅचाकर सूखा राशन देने की व्यवस्था की है ताकि लॉकडाउन के दौरान बच्चे घर पर ही सुरक्षित रहें और उन्हे शासकीय योजना का लाभ भी मिलता रहे। विभिन्न संकाय से संबंधित विषयानुसार ऑनलाईन लेक्चर्स भी शिक्षको के द्वारा तैयार करके यू–ट्यूब पर भी उपलब्ध कराए जा रहे है जहॉ से सभी विद्यार्थी लाभान्वित हो सकते है।

वर्चुअल रियलटी वी आर और ऑगमेटेड रियलटी ए आर तकनीकी का भी इस्तेमाल शिक्षा के क्षेत्र में किया जा रहा है। मोबाइल पर क्लॉस और पढ़ाई के अलावा वी आर और एआर पढ़ाई के अनुभव को और सुविधाजनक बना रही है। दुनिया भर के छात्र इनकी मदद से शिक्षको की मौजूदगी के बिना भी चीजे समझ पा रहे है। अमेरिका के ही स्टार्टअप सीकएक्सआर ने ऐसा प्लेटफार्म बनाया है जिसमें बच्चे एआर गाइड की मदद से एनाटॉमी, एनिमल्स, आर्ट, बायोलॉजी, इतिहास और फिजिकल साइंस जैसे विषय पढ़ सकते है। एक्सपर्ट का कहना है कि यह लर्निग का ज्यादा कारगर तरीका है, शोध में भी पाया गया है कि हम जो चीज देखते है वो ज्यादा समय तक याद रहता है। विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षको के द्वारा आनॅलाईन टेस्ट भी लिए जा रहे है।

परिस्थिति कैसी भी हो उसमे सामंजस्य स्थापित करते हुए लक्ष्य को प्राप्त करने की क्षमता का विकास विद्यार्थियों में शिक्षा एवं शिक्षको की सहायता से किया जा सकता हैं। इस उद्देश्य को प्राप्त करने में डिजिटल लर्निग शिक्षा जगत के लिए वरदान सिद्ध हो रही है।

कोरोना संक्रमण काल का समाज पर प्रभाव :–

कोरोना संक्रमण का प्रभाव समाज पर भी दिखाई दे रहा है। अप्रवासी भारतीय अपने वतन को वापस लौट रहे है संकट के समय मातृभूमि ही सबसे सुरक्षित स्थान रहता है। विविधता में एकता के साथ आज भारत की जनता ने सामाजिक एकता को भी प्रदर्शित किया है। लॉकडाउन होने के कारण औद्योगिक, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, स्व रोजगार बंद होने की वजह से अधिकांश संख्या में लोग बेरोजगार हो गए है। कुछ लोगो ने अपना व्यवसाय परिवर्तन कर जिस व्यवसाय को लॉकडाउन में करने की अनुमति प्राप्त है उसे अपना लिया है। ऑटो, मिनी रिक्शा चालक अपने गाड़ी में आलू प्याज सब्जी बेचने का कार्य कर रहे है। विभिन्न राज्यो से बड़े औद्योगिक शहरो में काम करने वाले अप्रवासी मजदूर औद्योगिक, व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद होने से बेरोजगार हो गए हैं। उनके पास अपने परिवार के पालन पोषण के लिए राशन व पैसा नहीं है ऐसी स्थिति में ये अप्रवासी मजदूर अपने हजारो किलोमीटर दूर पैदल, साइकिल या किसी वाहन का सहारा लेकर अपने गृह राज्य जाने को मजबूर हो गए है। इस कठिन परिस्थिति मे सरकार ने इनके लिए आवश्यक कदम उठाए है। कोरोना संक्रमण काल में करीब 16 मजदूरो की मृत्यु औरंगाबाद में रेल्वे पटरी मार्ग से अपने घर पहुचने की जद्दोजहद में मालगाड़ी से एक्सीडेंट होने के कारण हो गई। कई

मजदूर ट्रको में भरकर अपने गृह राज्य को जा रहे है, सोशल डिस्टेशिंग व सुरक्षा नियमो का पालन न कर पाने के कारण से इनमे से कई कोरोना वायरस से संक्रमित भी पाए गए है।

कोरोना संक्रमण काल में समाज इनकी सुरक्षा के लिए आगे आया है। संपूर्ण देश में समाज सेवको ने जरूरतमंद व्यक्तियो एवं मजदूरो की सहायता के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया है। समाज सेवक जगह –जगह पर व्यवस्था कर जरूरतमंद व्यक्तियो एवं मजदूरो को भोजन पानी उपलब्ध करवा रहे है। सरकार ने भी गरीबो को तीन महीने का राशन उपलब्ध कराया है। पुलिस लोगो की सुरक्षा के साथ –साथ मानवीय भूमिका भी निभा रही है। कोरोना संक्रमण काल में डॉक्टर, नर्स, स्वास्थ्यकर्मी कोरोना वारियर्स की भूमिका अत्यन्त प्रंशसनीय है जो अपने जान को जोखिम में डालकर दिन रात मरीजो की सेवा कर हजारो लोगो की जिदंगी बचा रहे है।

लोगो के स्वास्थ्य आदतों में भी परिवर्तन आया है। कोरोना संक्रमण काल में समय –समय पर हाथ को सैनिटाइज करना या साबुन से धोना बहुत जरूरी है जिसका पालन किया जा रहा है। इससे अधिकांश लोगो में खाना खाने से पहले हाथ धोने की प्रवृत्ति विकसित हो गई है जिससे वे भविष्य में अन्य खतरनाक बीमारियों से भी सुरक्षित रहेगें। अभिवादन करने का तरीका बदल गया हैं अब लोग हाथ मिलाने की जगह हाथ जोड़कर नमस्कार कह अभिवादन करते है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए प्राचीन आयुर्वेदिक पद्वतियों को अपनाया जा रहा है। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा जनता को कोरोना संक्रमण से सुरक्षित रहने के लिए दिशा –निर्देश जारी किए गए है। लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो गए है। स्वंय घर पर ही रहकर ऑनलाइन दिशा निर्देश लेकर योगाभ्यास कर रहे है। भारत सरकार द्वारा आरोग्य सेतु एप विकसित किया गया है जो कोरोना संक्रमण को रोकने की दिशा मे महत्वपूर्ण कदम है। वर्तमान समय में इस एप को 10.08 करोड़ जनता प्रयोग कर रही है। इस एप से लोगो को अपने आस–पास कोरोना संक्रमित की जानकारी मिलती है। साथ ही साथ इस एप को प्रयोग करने वाले अपने स्वास्थ्य परीक्षण इस एप के माध्यम से स्वंय कर अपनी स्वास्थ्य संबंधी सूचना सरकार को उपलब्ध करवा रहे है।

कोरोना संक्रमण काल में प्रथा, परंपराओ में भी परिवर्तन देखने को मिला है। विवाह इस समय कम हो रहे है जिनका इस अवधि में विवाह तय था उन्होने इस समय अपना विवाह कोरोना संक्रमण तक स्थगित कर दिया है। प्रशासन की अनुमति से कुछ लोगो की उपस्थिति मे विवाह संपन्न भी हो रहे है। धार्मिक आयोजन नहीं हो रहे है। धार्मिक मान्याताओं का पालन लॉकडाउन नियमों के अनुसार किया जा रहा है। नवरात्रि के अवसर पर जहॉ हजारो की संख्या में ज्योति कलश प्रज्जवलित किए जाते थे वही लॉकडाउन के समय परम्परा निर्वाह करने के कुछ मंदिरो में केवल एक ज्योति कलश प्रज्जवलित किया गया। मंदिर बंद है, इसलिए भक्तो के लिए ऑनलाईन दर्शन की व्यवस्था इन्टरनेट के माध्यम से किया गया है। अंतिम संस्कार की प्रक्रिया भी प्रशासन की अनुमति से केवल 20 लोगो की उपस्थिति में नियमो का पालन करते हुए किया जा रहा है। कोरोना का भय लोगो के मन में इस तरह व्यापत हो गया है कि कुछ जगह पर लोगो ने अपने सगे सम्बन्धी का अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया। दंतेवाड़ा के कटेकल्याण ब्लॉक का गॉव गुड़से मे गांव के युवक के शव को नाले में दफनाना पड़ा। शुजालपुर निवासी की कोरोना पॉजिटिव होने से मृत्यु होने पर उनके परिवार ने अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया जिसके बाद तहसीलदार ने परिवार के लोगो का पंचनामा बनाकर कोरोना संक्रमित मरीज का अंतिम संस्कार किया।

लॉकडाउन समय में लोग घर पर ही है। वर्क फॉर होम का कल्चर बढ़ गया है मोबाइल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट के प्रयोग से ऑफिस कार्य किए जा रहे है। सोशल मीडिया के माध्यम से लोगो को कोरोना संक्रमण के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। लॉकडाउन समय का उपयोग लोगो के द्वारा अपने परिवार को समय देने में, पुराने दिनो को याद करने में, फोन पर अपने मित्रो, रिश्तेदारो का हालचाल

जानने में, नई –नई चीजो को सीखने में किया जा रहा है। पशु पक्षियो के खाने की व्यवस्था भी लोगो के द्वारा की जा रही है। बाजार खुलने का निश्चित टाइम –टेबल निर्धारित किया गया है जिसका पालन किया जा रहा है। केवल आवश्यकता होने पर ही लोग घरो से बाहर निकल रहें है इस प्रकार लॉकडाउन अवधि में लोग व्यवस्थित हो गये है। अपराध दर में कमी आई है, परंतु घरेलु हिंसा के मामले में वृद्वि हुई है।

निष्कर्ष :–

कोरोना संक्रमण के पूर्व का समाज एवं कोरोना संक्रमण के पश्चात् समाज में कितना परिवर्तन देखने को मिलेगा यह अभी अनुमान नही लगाया जा सकता है, क्योकि सामाजिक परिवर्तन कई कारको से प्रभावित होता है।

संदर्भ सूची :–

1. दैनिक भास्कर समाचार पत्र, गुरूवार, 9 अप्रैल 2020।
2. हरिभूमि समाचार पत्र, शनिवार,18 अप्रैल 2020।
3. हरिभूमि समाचार पत्र, गुरूवार, 23 अप्रैल 2020।
4. दैनिक भास्कर समाचार पत्र, रविवार, 3 मई 2020।
5. हरिभूमि समाचार पत्र, सोमवार,11 मई 2020।
6. franchiseindia.com
7. newslaundry.com
8. डा.योगेश गुप्ता, m.patrika.com.
9. www.rajasthangyan.com

****